गाजीपुर की किशोरियों के व्यावहारिक विकास पर पोषण न्यूनता का प्रभाव

* श्रीमती सुनीता पाण्डेय

प्रस्तुत शोध अध्ययन उत्तर–प्रदेश में स्थित गाजीपुर जनपद के 500 कि ोरियों पर किया गया है, जिसमें 250 उच्च पोशण स्तर एवं 250 निम्न पोशण स्तर की कि ोरियों को लिया गया है। स्तरीय कि ोरियों का सामाजिक विकास मध्यमान प्राप्तांक 59.392 तथा निम्न पोशण स्तरीय कि ोरियों का सामाजिक विकास मध्यमान प्रप्तांक 56.992 पाया गया। इसी प्रकार नैतिक विकास मापनी पर उच्च पोशण समूह की कि ोरियों की अपेक्षा निम्न पोशण समूह की कि ोरियों ने अधिक मध्यमान प्राप्तांक 59.444 प्राप्त किया, जबकि उच्च पोशण समूह की कि ोरियों ने कम मध्यमान प्राप्तांक 58.792 प्राप्त किया जो इस बात को स्पष्ट करता है कि पोशण स्तर नैतिक विकास को प्रभावित नहीं करती है। कि ोरियों के व्यावहारिक विकास के एक आयाम सामाजिक विकास को तो पोशण न्यूनता प्रभावित करती है किन्तु दूसरे आयाम नैतिक विकास को प्रभावित नहीं करती है।

साहित्य का पुनरावलोकन : (Review of Literature)-पोशण न्यूनता एवं सामाजिक विकास के सम्बन्ध ा में किये गये कुछ अध्ययनों मिचेल मेंनडिजा, जेम्स परसॉल्ट (1966 – 1980) अल्मोड़ा एवं उनके सहयोगी (2001), हंस (1990), बेनीफिस गार्नियर (2001), ने इस बात की पुश्टि की है कि पोशण न्यूनता कि ोरियों के सामाजिक विकास को काफी हद तक प्रभावित करती है। इसी प्रकार नैतिक विकास के संबन्ध में हुए अध्ययनों का पुनरावलोकन से यह ज्ञात हुआ कि नैतिक विकास को धर्म, विद्यालय और माता–पिता के अनु ाासन अधिक प्रभावित करते है, इसी बात का समर्थन हीले, ब्रूनर (1936), हार्ट ोर(1928) ने की है तथा प्रस्तुत शोध के परिणामों का भी समर्थन करते हैं, किन्तु एनड्रिव, टॉमकिन्स(2001) तथा प्राप्त परिणाम के बीच विसंगतियां पायी गयी है।

विधि एवं प्रक्रिया : (Methodology)-प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु यादृच्छिक चयन विधि द्वारा गाजीपुर जनपद की 500 ऐसी कि ोरियों का चयन किया गया है जिसमें 250 उच्च पोशण स्तर तथा 250 न्यून पोशण स्तर की कि ोरियां थी। उनके पोशण स्तर निर्धारण हेतु उन पर पोशण स्तर मूल्यांकन प्रश्नावली प्र ाासित की गयी। तत्पश्चात् दोनों समूहों के व्यावहारिक विकास निर्धारण हेतु उन पर सामजिक एवं नैतिक विकास मापनी प्र ाासित की गयी तथा प्राप्त परिणामों के सांख्यिकीय वि लेशण हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, टी मूल्य तथा सार्थकता स्तर का भी प्रयोग किया गया है।

परिणाम एवं निष्कर्ष : (Resault and conclusion)–कि ोरियों के व्यावहारिक विकास के आयाम सामाजिक विकास पर पोशण न्यूनता के प्रभावों का अध्ययन करने पर पाया गया कि उच्च पोशण स्तर की कि ोरियों ने निम्न पोशण स्तर की कि ोरियों की अपेक्षा सामाजिक विकास मापन प्रश्नावली पर उच्च अंक प्राप्त किया है। जिसका तात्पर्य यह कि उच्च पोशण स्तर की कि ोरियों का सामाजिक विकास निम्न पोशण स्तर की कि ोरियों की तुलना में अच्छा पाया गया। उच्च पोशण स्तर की कि ोरियों में नेत त्व भावना, विचारों की अभिव्यक्ति, सामाजिक कार्यक्रमों में सक्रियता आदि गुणों का विकास निम्न पोशण स्तर की कि ोरियों की अपेक्षा अधिक पाया गया, तथा दोनों पोशण समूहों के मध्यमानों के बीच अन्तर की सार्थकता को ज्ञात करने के लिए 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया, प्राप्त टी मूल्य – 3.436937 सांख्यिकीय द श्टिकोण से 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया, जो निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट होता है–अतः सामाजिक विकास मापनी पर अधिक मध्यमान प्राप्तांक उच्च स्तर के सामाजिक विकास की ओर संकेत करता है। इसलिए प्राप्त परिणाम से इस तथ्य पर

पोषण स्तर समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
उच्च पोषण	250	59.372	7.54755	3.436937	< 0.01सार्थक
निम्न पोषण	250	56.992	7.931935		

प्रका ा पड़ता है कि उच्च पोशण समूह के परीक्षार्थियों का सामाजिक विकास निम्न पोशण समूह के परीक्षार्थियों की तुलना में अच्छा है क्योंकि बालक–बालिकाओं का समाजिक विकास बहुत कुछ उनके स्वास्थ्य और शारीरिक रचना पर निर्भर करता है, तथा उनका उत्तम स्वास्थ्य और शारीरिक रचना उनके द्वारा लिए जाने वाले आहार से प्राप्त उचित पोशण पर निर्भर करता है। अतः शारीरिक से अस्वस्थ एवं पोशणात्मक समस्या के ि ाकार बच्चों एवं कि ोरियों के अन्दर नेतृत्व भावना, सहकारिता, मित्रता, आत्म–प्रदर्शन सामाजिक कार्यक्रमों में सक्रियता से भाग लेना, दूसरों की सहयता करना, अपने भविश्य के लिए किसी फैसले पर निर्णय लेने की क्षमता, विचारों की अभिव्यक्ति, दूसरों से प्रतियोगिता की भावना आदि सामाजिक लक्षण बहुत अधिक विकसित नहीं हो पाते है।

इसी प्रकार कि ोरियों के नैतिक विकास पर पोशण न्यूनता के पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करने पर पाया गया

* विषय-वस्तु विशेषज्ञ-गृह विज्ञान विभाग, कृषि विज्ञान केन्द्र, पी.जी. कॉलेज, गाजीपुर (उ.प्र.)

कि निम्न पोशण स्तर की कि ाोरियों ने उच्च पोशण स्थर की कि ाोरियों की अपेक्षा नैतिक विकास मापनी पर अधिक अंक प्राप्त किया, जो इस बात का संकेत करते हैं कि पोशण स्तर (पोशण समूह) व्यक्ति के नैतिक मूल्यों का निर्धारण नहीं करते हैं। क्योंकि यदि यह तथ्य सही होता तो निश्चित है कि उच्च पोशण स्तर की कि ाोरियों का नैतिक विकास अच्छा पाया जाता, किन्तु उच्च पोशण समूह की कि ाोरियों का नैतिक विकास पर मध्यमान प्राप्तांक 58.792 तथा निम्न पोशण समूह की कि ाोरियों का मध्यमान प्राप्तांक 59.444 पाया गया। जिससे यह स्पष्ट होता है कि निम्न पोशण समूह की कि ाोरियों का मध्यमान प्राप्तांक उच्च पोशण स्तर की कि ाोरियों की तुलना में अधिक है। जिससे स्पष्ट होता है कि बालिकाओं का नैतिक विकास उसके पोशण स्तर से प्रभावित नहीं होता है। उच्च एवं निम्न पोशण समूहों के परीक्षार्थियों के नैतिक व्यवहार विकास के मध्यमान के बीच अन्तर भी बहुत कम पाया गया जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं है, जो निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट होता है कि –(तालिक–2 देखे) उच्च एवं निम्न पोशण समूह की कि ाोरियों ने नैतिक व्यवहार विकास पर आधारित सभी प्रश्नों के उत्तर लगभग समान ही दिये हैं। बल्कि निम्न पोशण समूहों के परीक्षार्थियों ने अधिक उपयुक्त उत्तर दिये है, जिसके कारण उनका नैतिक विकास अच्छा पाया गया है। दोनों समूहों के परीक्षार्थियों में बड़ों एवं

नैतिक विकास मापनी पर उच्च एवं निम्न पोषण समूहों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी मूल्य तालिका :

पोषण स्तर समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
उच्च पोषण	250	58.792	6.688474	1.025367	> 0.05 सार्थक नहीं है।
निम्न पोषण	250	59.444	7.50628		

छोटों के प्रति आदर भाव, सम्मान की भावना, सामजिक मान्यताओं के प्रति सम्मान, अनु ाासन, उचित–अनुचित का ज्ञान, ईमानदारी की भावना, आद ार्ों की पहचान सत्यवादिता, सहिश्णु, विचारवान, परोपकारी, दूसरों के लिए त्याग की भावना तथा आत्म–नियंत्रण की भावना आदि का अच्छा विकास पाया गया है। यदि वास्तव में पोशण स्तर व्यक्ति के नैतिक मूल्यों का निर्धारण करता है तो नि चय ही उच्च एवं निम्न पोशण समूह के परीक्षार्थियों के नैतिक व्यवहार के विकास में विभिन्नता दिखाई देती। विभिन्नता तो पायी गई किन्तु विभिन्नता विपरीत पायी गयीं उच्च पोशण समूह की अपेक्षा निम्न पोशण समूह की कि ाोरियों का नैतिक व्यवहार अच्छा पाया गया ।

नैतिक विकास एवं मूल्यों पर अब तक जो भी अध्ययन सम्पन्न किये गये है, उनमें मुख्य रूप से उन कारकों का पता लगाया गया है जो नैतिक विकास को प्रभावित करते है। और पाया गया है कि धर्म, विद्यालय और माता–पिता के अनु ाासन का बालक के नैतिक विकास पर अधिक प्रभाव पड़ता है तथा इस परिणाम का समर्थन W.Healy, 1936, H.Hartshore,1928 के किये गये अध्ययनों के परिणाम करते है तथा प्रस्तुत शोध ा के परिणामों का भी समर्थन करते है।

अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कि ाोरियों के सामाजिक विकास पर पोशण स्तर का भी प्रभाव पड़ता है, प्रत्यक्षतः नहीं किन्तु अप्रत्यक्ष रूप से ही पड़ता है, क्योंकि कि ाोरियों की शारीरिक द ाा एवं उत्तम स्वास्थ्य उचित पोशण पर ही निर्भर करता है, और यदि कि ाोरियों का शारीरिक विकास तथा स्वास्थ्य अच्छा नहीं होता तो उनका सामाजिक विकास भी अच्छा नहीं होता। किन्तु नैतिक विकास के संबंध में ठीक विपरीत परिणाम प्राप्त हुए। अध्ययन के दौरान पाया गया कि उच्च पोशण स्तर की कि ाोरियों की अपेक्षा निम्न पोशण स्तर की कि ाोरियों का नैतिक विकास अधिक अच्छा है। उनमें नैतिक भावना एवं नैतिक मूल्यों के सम्मान की भावना अधिाक पायी गयी, लेकिन उच्च एवं निम्न पोशण समूहों के कि ाोरियों के नैतिक व्यवहार, मूल्य, आदर–भाव, सम्मान आदि की भावना लगभग समान ही पायी गयी बहुत कम विभिन्नता दिखाई दी जो सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं पायी गयी है।

सन्दर्भ-

1. Almcida, S.S and De Aravjo M.I. Usaq Pavlo, FF. (LRP Lab of Nutrition and Behavior Ribei rao Preto Brazil) 2001, Sept.: Postnatal Protein mal-nutrition effects Play behavior and other social interaction sin juvernile rats. 2. Barbara, Demming Adams : The Remarkable role of nutrition in learning behavior nutrition & food Science (2005), Vol 35, Issue-4, Page -258-263. 3. Sally Grantham Mc Gregor, C. Ani (2001). A review of Studiesa on the effect of Iron deficiency on Cognitive development in Children. Journal of nutrition. 4. Bedi, K.S. (1992) : Spatial learning ability of ratesa under nourished during early Postnatal life. Physiology & Behaviour Vol. 51(s), 1001-1007. 5. Mari S Gloub, Carl L. Keen, M. Eric Gersh win and Andrew G. Hendricx (1995): Development zinc deficiency and behavior: Journal of Nutrition. 6. Heald, F.P. (ed), Adolesacent Nutrition and Growth 7. M. Swaminathan : Hand book of food and Nutrition. 8. V. N. Patwardhan, S.N. Jagannathan : 'A Review of Nutrition Studiesa in India, Spl. Report No. 37, ICMR, New Delhi. 9. R.E Chhaddak : Principlesa and Methods of Statistic. 10. श्रीमती गायत्री वर्मन – कि ाोरावस्था 11. डॉ0 मंजू शर्मा – विकासात्मक मनोविज्ञान 12. महे ा भार्गव – कि ाोर मनोविज्ञान 13. डॉ0 एच. के. कपिल – अनुसंधान विधि ायां 14. ईवा डी0 विल्सन, कैथराइन, एच0 फि ार, मेंरी ई0 फ्यूका, : पोशण के सिद्धांत।